Session 2020-21

Class- VII

Subject: English

Study Material

Topic- Informal Letter Writing

Instructions- 1. Click the link https://youtu.be/qO92of2fFqY

2. Go through the whole video properly.

3. Make a note of the content taught in the video in your English grammar copy in the following given order:-

a) What is a letter?
b) What are the different types of letters? Define them.
c) What is the format of informal letter?
d) Write the sample letter given in the video.

4. **Assignment**- After watching the whole video, do the following in your English grammar copies-

a) Write a letter to your sister describing your recent trip to Chennai or any other city you have recently visited.
b) Write a letter to your younger brother advising him to study hard for his exams and not to get disturbed by spending too much time surfing on the internet.

CBSE Class 07 Hindi
NCERT Solutions
पाठ-02 दादी माँ

1. लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-साथ बचपन की और किन-किन बातों की याद आ जाती है?

उत्तर:- जब लेखक को मालूम हुआ कि उनकी दादी माँ की मृत्यु हो गयी है तो उनकी आँखों के सामने दादी माँ के साथ बिताईं गई कई यादें सजीव हो उठी। उसे अपने बचपन की स्मृतियाँ जैसे-गंधपूर्ण झाग भरे जलाशयों में कूदना, बीमार होने पर दादी का दिन-रात सेवा करना तथा खास तौर पर साफ-सफाई का ध्यान रखना, किशन भैया की शादी पर औरतों द्वारा किए जानेवाले गीत और अभिनय के समय बीमार लेखक का चादर ओढ़कर सोना और पकड़े जाने पर दादी माँ का उनका पक्ष लेना, साथ ही उसे रामी चाची की घटना भी याद आ जाती हैं,जब दादीमाँ ने उनकी आर्थिक मदद की।

2. दादाजी की मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति खराब क्यों हो गयी थी?

उत्तर:- दादाजी की मृत्यु के पश्चात् लेखक के पिताजी व भैया ने धन का सही उपयोग नहीं किया था। ग़लत मित्रों की संगति में सारा धन नष्ट कर डाला। दादाजी के श्राद्ध पर भी दादी माँ के मना करने पर लेखक के पिताजी ने अपार संपत्ति व्यय की फलस्वरूप उनके घर की आर्थिक स्थिति और बिगड़ गई।

3. दादी माँ के स्वभाव का कौन सा पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों?

उत्तर:- दादी माँ का सेवा, संरक्षण, परोपकारी व सरल स्वभाव हमें सबसे अच्छा लगता है। दादी माँ मुँह से भले कड़वी थी परन्तु घर के सदस्यों तथा दूसरों की आर्थिक मदद के लिए हर समय तैयार रहती थी।आवश्यकता के समय दादाजी की अन्तिम निशानी सोने का कंगन देकर घरवालों की मदद की, रामी चाची का कर्ज माफ़ कर उसे नकद रूपए भी दिए ताकि उसकी बेटी का विवाह निर्विघ्न संपन्न हो जाए। इन्हीं कारणों से ही वे दूसरों का मन जीतने में सदा सफल रहीं।

4. आपने इस कहानी में महीनों के नाम पढ़ें, जैसे - क्वार, आषाढ़, माघ। इन महीनों में मौसम कैसा रहता है, लिखिए।

उत्तर:- क्वार - इस महीने में न तो अधिक गर्मी और न ही अधिक सर्दी होती है अर्थात् हल्की-हल्की ठंड रहती है। आमतौर पर मौसम साफ़ रहता है।

आषाढ़ - वैसे यह मौसम वर्षा का होता है परन्तु इस महीने वर्षा न हो तो गर्मी बढ़ जाती है।

माघ - इस महीने में अत्यधिक सर्दी होती है।भयंकर सर्दी से सभी का बुरा हाल होता है।

5. 'अपने-अपने मौसम की अपनी बातें होती हैं' - लेखक के इस कथन के अनुसार यह बताइए कि किस मौसम में कौन-कौन सी चीज़ें विशेष रूप से मिलती हैं?

उत्तर:- क्वार के महीने में तरबूज, खरबूज, फालसे और लीची मिलते हैं।

आषाढ़ के महीने में आम, जामुन और खीरा मिलते हैं।

माघ के महीने में अंगूर, केले, अमरुद और गुड़ मिलता है।

• भाषा की बात

6. नीचे दी गई पंक्तियों पर ध्यान दीजिए -

जरा-सी कठिनाई पड़ते

अनमना-सा हो जाता है

सन-से सफेद

समानता का बोध कराने के लिए सा, सी, से का प्रयोग किया जाता है।

ऐसे पाँच और शब्द लिखिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

उत्तर:- 1.नीला-सा : आकाश नीला-सा हो गया है।

2.रुई-से : नानीजी के बाल रुई-से सफ़ेद हो गए थे।

3.मिश्री-सी : बाल कृष्ण की बातें गोपियों को मिश्री-सी लगती थीं।

4.चाँद-सा : उसका चेहरा चाँद-सा गोल है।

5.सागर-सी : उसकी आँखों में सागर सी गहराई है।

7. कहानी में 'छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं, पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं' - जैसे वाक्य आए हैं। किसी क्रिया को ज़ोर देकर कहने के लिए एक से अधिक बार एक ही शब्द का प्रयोग होता है। जैसे वहाँ जा-जाकर थक गया, उन्हें ढूँढ़-ढूँढ़कर देख लिया।

इस प्रकार के पाँच वाक्य बनाइए।

उत्तर:- 1.बच्चे अपने उत्तरों को बोल-बोलकर याद कर रहे थे।

2.उस नन्हें बच्चे की शरारतों को देख-देखकर हम थक गए थे।

3.ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर तुम क्या साबित करना चाहते हो?

4.बार-बार उसके उस सवाल करने से हम तंग आ गए थे।

5.पुलिस ने अपराधी को पीट-पीटकर अधमरा कर दिया।

8. बोलचाल में प्रयोग होनेवाले शब्द और वाक्यांश 'दादी माँ' कहानी में हैं। इन शब्दों और वाक्यांशों से पता चलता है कि यह कहानी किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित है। ऐसे शब्दों और वाक्यांशों में क्षेत्रीय बोलचाल की खूबियाँ होती हैं।

उदाहरण के लिए - निकसार, बरह्मा, उरिन, चिउड़ा, छौंका इत्यादि शब्दों को देखा जा सकता है। इन शब्दों का उच्चारण अन्य क्षेत्रीय बोलियों में अलग ढंग से होता है, जैसे - चिउड़ा को चिड़वा, चूड़त्र, पोहा और इसी तरह छौंका को छौंक,तड़का भी कहा जाता है। निकसार, उरिन और बरह्मा शब्द क्रमशः निकास, उऋण और ब्रह्मा शब्द का क्षेत्रीय रूप हैं। इस प्रकार के दस शब्दों को बोलचाल में उपयोग होनेवाली भाषा/बोली से एकत्र कीजिए और कक्षा में लिखकर दिखाइए।

उत्तर:- काहे, बंदा, किरपा, कार-परोजन, लचमन, आपा, भनक, घना, बटेऊ आदि।

0750CH02

2 दादी माँ

कमज़ोरी ही है अपनी, पर सच तो यह है कि ज़रा-सी कठिनाई पड़ते; बीसों गरमी, बरसात और वसंत देखने के बाद भी, मेरा मन सदा नहीं तो प्रायः अनमना-सा हो जाता है। मेरे शुभचिंतक मित्र मुँह पर मुझे प्रसन्न करने के लिए आनेवाली छुट्टियों की सूचना देते हैं और पीठ पीछे मुझे कमज़ोर और ज़रा-सी प्रतिकूलता से घबरानेवाला कहकर मेरा मज़ाक उड़ाते हैं। मैं सोचता हूँ, 'अच्छा, अब कभी उन बातों को न सोचूँगा। ठीक है, जाने दो, सोचने से होता ही क्या है'। पर, बरबस मेरी आँखों के सामने शरद की शीत किरणों के समान स्वच्छ, शीतल किसी की धुँधली छाया नाच उठती है।

मुझे लगता है जैसे क्वार के दिन आ गए हैं। मेरे गाँव के चारों ओर पानी ही पानी हिलोरें ले रहा है। दूर के सिवान से बहकर आए हुए मोथा और साईं की अधगली घासें, घेऊर और बनप्याज की जड़ें तथा नाना प्रकार की बरसाती

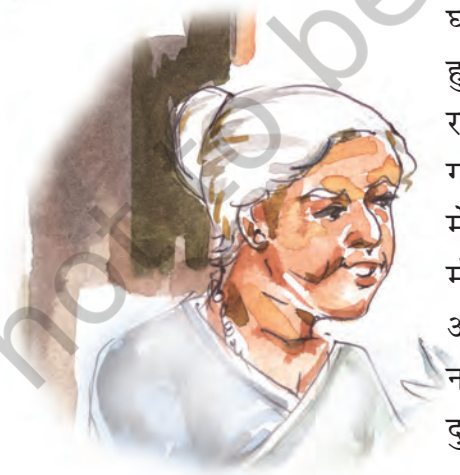

घासों के बीज, सूरज की गरमी में खौलते हुए पानी में सड़कर एक विचित्र गंध छोड़ रहे हैं। रास्तों में कीचड़ सूख गया है और गाँव के लड़के किनारों पर झागभरे जलाशयों में धमाके से कूद रहे हैं। अपने-अपने मौसम की अपनी-अपनी बातें होती हैं। आषाढ़ में आम और जामुन न मिलें, चिंता नहीं, अगहन में चिउड़ा और गुड़ न मिले, दुख नहीं, चैत के दिनों में लाई के साथ गुड़

© NCERT not to be republished

की पट्टी न मिले, अफ़सोस नहीं, पर क्वार के दिनों में इस गंधपूर्ण झागभरे जल में कूदना न हो तो बड़ा बुरा मालूम होता है। मैं भीतर हुड़क रहा था। दो-एक दिन ही तो कूद सका था, नहा-धोकर बीमार हो गया। हलकी बीमारी न जाने क्यों मुझे अच्छी लगती है। थोड़ा-थोड़ा ज्वर हो, सर में साधारण दर्द और खाने के लिए दिनभर नींबू और साबू। लेकिन इस बार ऐसी चीज़ नहीं थी। ज्वर जो चढ़ा तो चढ़ता ही गया। रज़ाई पर रज़ाई—और उतरा रात बारह बजे के बाद।

दिन में मैं चादर लपेटे सोया था। दादी माँ आईं, शायद नहाकर आई थीं, उसी झागवाले जल में। पतले-दुबले स्नेह-सने शरीर पर सफ़ेद किनारीहीन धोती, सन-से सफ़ेद बालों के सिरों पर सद्यः टपके हुए जल की शीतलता। आते ही उन्होंने सर, पेट छुए। आँचल की गाँठ खोल किसी अदृश्य शक्तिधारी के चबूतरे की मिट्टी मुँह में डाली, माथे पर लगाई। दिन-रात चारपाई के पास बैठी रहतीं, कभी पंखा झलतीं, कभी जलते हुए हाथ-पैर कपड़े से सहलातीं, सर पर दालचीनी का लेप करतीं और बीसों बार छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं। हाँडी में पानी आया कि नहीं? उसे पीपल की छाल से छौंका कि नहीं? खिचड़ी में मूँग की दाल एकदम मिल तो गई है? कोई बीमार के घर में सीधे बाहर से आकर तो नहीं चला गया, आदि लाखों प्रश्न पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं।

दादी माँ को गँवई-गाँव की पचासों किस्म की दवाओं के नाम याद थे। गाँव में कोई बीमार होता, उसके पास पहुँचतीं और वहाँ भी वही काम। हाथ छूना, माथा छूना, पेट छूना। फिर भूत से लेकर मलेरिया, सरसाम, निमोनिया तक का अनुमान विश्वास के साथ सुनातीं। महामारी और विशूचिका के दिनों में रोज़ सवेरे उठकर स्नान के बाद लवंग और गुड़-मिश्रित जलधार, गुग्गल और धूप। सफ़ाई कोई उनसे सीख ले। दवा में देर होती, मिश्री या शहद खत्म हो जाता, चादर या गिलाफ़ नहीं बदले जाते, तो वे जैसे पागल हो जातीं। बुखार तो मुझे अब भी आता है। नौकर पानी दे जाता है, मेस-महाराज अपने मन से पकाकर खिचड़ी या साबू। डॉक्टर साहब आकर नाड़ी देख जाते हैं और कुनैन मिक्सचर की शीशी की तिताई के डर से बुखार भाग भी जाता है, पर न जाने क्यों ऐसे बुखार को बुलाने का जी नहीं होता!

© NCERT not to be republished

किशन भैया की शादी ठीक हुई, दादी माँ के उत्साह और आनंद का क्या कहना! दिनभर गायब रहतीं। सारा घर जैसे उन्होंने सर पर उठा लिया हो। पड़ोसिनें आतीं। बहुत बुलाने पर दादी माँ आतीं, "बहिन बुरा न मानना। कार–परोजन का घर ठहरा। एक काम अपने हाथ से न करूँ, तो होनेवाला नहीं।" जानने को यों सभी जानते थे कि दादी माँ कुछ करतीं नहीं। पर किसी काम में उनकी अनुपस्थिति वस्तुतः विलंब का कारण बन जाती। उन्हीं दिनों की बात है। एक दिन दोपहर को मैं घर लौटा। बाहरी निकसार में दादी माँ किसी पर बिगड़ रही थीं। देखा, पास के कोने में दुबकी रामी की चाची खड़ी है। "सो न होगा, धन्नो! रुपये मय सूद के आज दे दे। तेरी आँख में तो शरम है नहीं। माँगने के समय कैसी आई थी! पैरों पर नाक रगड़ती फिरी, किसी ने एक पाई भी न दी। अब लगी है आजकल करने–फसल में दूँगी, फसल में दूँगी...अब क्या तेरी खातिर दूसरी फसल कटेगी?"

© NCERT not to be republished

"दूँगी, मालकिन!" रामी की चाची रोती हुई, दोनों हाथों से आँचल पकड़े दादी माँ के पैरों की ओर झुकी, "बिटिया की शादी है। आप न दया करेंगी तो उस बेचारी का निस्तार कैसे होगा!"

"हट, हट! अभी नहाके आ रही हूँ!" दादी माँ पीछे हट गईं।

"जाने दो दादी," मैंने इस अप्रिय प्रसंग को हटाने की गरज से कहा, "बेचारी गरीब है, दे देगी कभी।"

"चल, चल! चला है समझाने..."

मैं चुपके से आँगन की ओर चला गया। कई दिन बीत गए, मैं इस प्रसंग को एकदम भूल-सा गया। एक दिन रास्ते में रामी की चाची मिली। वह दादी को 'पूतों फलो दूधों नहाओ' का आशीर्वाद दे रही थी! मैंने पूछा, "क्या बात है, धन्नो चाची", तो उसने विह्वल होकर कहा, "उरिन हो गई बेटा, भगवान भला करे हमारी मालकिन का। कल ही आई थीं। पीछे का सभी रुपया छोड़ दिया, ऊपर से दस रुपये का नोट देकर बोलीं, 'देखना धन्नो, जैसी तेरी बेटी वैसी मेरी, दस-पाँच के लिए हँसाई न हो।' देवता है बेटा, देवता।"

"उस रोज़ तो बहुत डाँट रही थीं?" मैंने पूछा।

"वह तो बड़े लोगों का काम है बाबू, रुपया देकर डाँटें भी न तो लाभ क्या!"

मैं मन-ही-मन इस तर्क पर हँसता हुआ आगे बढ़ गया।

किशन के विवाह के दिनों की बात है। विवाह के चार-पाँच रोज़ पहले से ही औरतें रात-रातभर गीत गाती हैं। विवाह की रात को अभिनय भी होता है। यह प्रायः एक ही कथा का हुआ करता है, उसमें विवाह से लेकर पुत्रोत्पत्ति तक के सभी दृश्य दिखाए जाते हैं—सभी पार्ट औरतें ही करती हैं। मैं बीमार होने के कारण बारात में न जा सका। मेरा ममेरा भाई राघव दालान में सो रहा था (वह भी बारात जाने के बाद पहुँचा था)। औरतों ने उस पर आपत्ति की।

दादी माँ बिगड़ीं, "लड़के से क्या परदा? लड़के और बरह्मा का मन एक-सा होता है।"

© NCERT not to be republished

मुझे भी पास ही एक चारपाई पर चादर उढ़ाकर दादी माँ ने चुपके से सुला दिया था। बड़ी हँसी आ रही थी। सोचा, कहीं ज़ोर से हँस दूँ, भेद खुल जाए तो निकाल बाहर किया जाऊँगा, पर भाभी की बात पर हँसी रुक न सकी और भंडाफोड़ हो गया।

देबू की माँ ने चादर खींच ली, "कहो दादी, यह कौन बच्चा सोया है। बेचारा रोता है शायद, दूध तो पिला दूँ।" हाथापाई शुरू हुई। दादी माँ बिगड़ीं, "लड़के से क्यों लगती है!"

सुबह रास्ते में देबू की माँ मिलीं, "कल वाला बच्चा, भाभी!" मैं वहाँ से ज़ोर से भागा और दादी माँ के पास जा खड़ा हुआ। वस्तुतः किसी प्रकार का अपराध हो जाने पर जब हम दादी माँ की छाया में खड़े हो जाते, अभयदान मिल जाता।

स्नेह और ममता की मूर्ति दादी माँ की एक-एक बात आज कैसी-कैसी मालूम होती है। परिस्थितियों का वात्याचक्र जीवन को सूखे पत्ते-सा कैसा नचाता है, इसे दादी माँ खूब जानती थीं। दादा की मृत्यु के बाद से ही वे बहुत उदास रहतीं। संसार उन्हें धोखे की टट्टी मालूम होता। दादा ने उन्हें स्वयं जो धोखा दिया। वे सदा उन्हें आगे भेजकर अपने पीछे जाने की झूठी बात कहा करते थे। दादा की मृत्यु के बाद कुकुरमुत्ते की तरह बढ़नेवाले, मुँह में राम बगल में छुरीवाले दोस्तों की शुभचिंता ने स्थिति और भी डाँवाडोल कर दी। दादा के श्राद्ध में दादी माँ के मना करने पर भी पिता जी ने जो अतुल संपत्ति व्यय की, वह घर की तो थी नहीं।

दादी माँ अकसर उदास रहा करतीं। माघ के दिन थे। कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा था। पछुवा का सन्नाटा और पाले की शीत हड्डियों में घुसी पड़ती। शाम को मैंने देखा, दादी माँ गीली धोती पहने, कोनेवाले घर में एक संदूक पर दिया जलाए, हाथ जोड़कर बैठी हैं। उनकी स्नेह-कातर आँखों में मैंने आँसू कभी नहीं देखे थे। मैं बहुत देर तक मन मारे उनके पास बैठा रहा। उन्होंने आँखें खोलीं। "दादी माँ!", मैंने धीरे से कहा।

"क्या है रे, तू यहाँ क्यों बैठा है?"

"दादी माँ, एक बात पूछूँ, बताओगी न?" मैंने उनकी स्नेहपूर्ण आँखों की ओर देखा।

© NCERT not to be republished

"क्या है, पूछ।"

"तुम रोती थीं?"

दादी माँ मुसकराईं, "पागल, तूने अभी खाना भी नहीं खाया न, चल-चल!"

"धोती तो बदल लो, दादी माँ", मैंने कहा।

"मुझे सरदी-गरमी नहीं लगती बेटा।" वे मुझे खींचती रसोई में ले गईं।

सुबह मैंने देखा, चारपाई पर बैठे पिता जी और किशन भैया मन मारे कुछ सोच रहे हैं। "दूसरा चारा ही क्या है?" बाबू बोले, "रुपया कोई देता नहीं। कितने के तो अभी पिछले भी बाकी हैं!" वे रोने-रोने-से हो गए।

"रोता क्यों है रे!" दादी माँ ने उनका माथा सहलाते हुए कहा, "मैं तो अभी हूँ ही।" उन्होंने संदूक खोलकर एक चमकती-सी चीज़ निकाली, "तेरे दादा ने यह कंगन मुझे इसी दिन के लिए पहनाया था।" उनका गला भर आया, "मैंने इसे पहना नहीं, इसे सहेजकर रखती आई हूँ। यह उनके वंश की निशानी है।" उन्होंने आँसू पोंछकर कहा, "पुराने लोग आगा-पीछा सब सोच लेते थे, बेटा।"

© NCERT not to be republished

सचमुच मुझे दादी माँ शापभ्रष्ट देवी-सी लगीं। धुँधली छाया विलीन हो गई। मैंने देखा, दिन काफ़ी चढ़ आया है। पास के लंबे खजूर के पेड़ से उड़कर एक कौआ अपनी घिनौनी काली पाँखें फैलाकर मेरी खिड़की पर बैठ गया। हाथ में अब भी किशन भैया का पत्र काँप रहा है। काली चींटियों-सी कतारें धूमिल हो रही हैं। आँखों पर विश्वास नहीं होता। मन बार-बार अपने से ही पूछ बैठता है–'क्या सचमुच दादी माँ नहीं रहीं?'

❐ *शिवप्रसाद सिंह*

प्रश्न-अभ्यास

कहानी से

1. लेखक को अपनी दादी माँ की याद के साथ-साथ बचपन की और किन-किन बातों की याद आ जाती है?
2. दादा की मृत्यु के बाद लेखक के घर की आर्थिक स्थिति खराब क्यों हो गई थी?
3. दादी माँ के स्वभाव का कौन सा पक्ष आपको सबसे अच्छा लगता है और क्यों?

कहानी से आगे

1. आपने इस कहानी में महीनों के नाम पढ़े, जैसे–क्वार, आषाढ़, माघ। इन महीनों में मौसम कैसा रहता है, लिखिए।

© NCERT not to be republished

2. 'अपने-अपने मौसम की अपनी-अपनी बातें होती हैं'—लेखक के इस कथन के अनुसार यह बताइए कि किस मौसम में कौन-कौन सी चीज़ें विशेष रूप से मिलती हैं?

अनुमान और कल्पना

1. इस कहानी में कई बार ऋण लेने की बात आपने पढ़ी। अनुमान लगाइए, किन-किन पारिवारिक परिस्थितियों में गाँव के लोगों को ऋण लेना पड़ता होगा और यह उन्हें कहाँ से मिलता होगा? बड़ों से बातचीत कर इस विषय में लिखिए।
2. घर पर होनेवाले उत्सवों / समारोहों में बच्चे क्या-क्या करते हैं? अपने और अपने मित्रों के अनुभवों के आधार पर लिखिए।

भाषा की बात

1. नीचे दी गई पंक्तियों पर ध्यान दीजिए—

> ज़रा-सी कठिनाई पड़ते
> अनमना-सा हो जाता है
> सन-से सफ़ेद

- समानता का बोध कराने के लिए सा, सी, से का प्रयोग किया जाता है। ऐसे पाँच और शब्द लिखिए और उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए।

2. कहानी में 'छू-छूकर ज्वर का अनुमान करतीं, पूछ-पूछकर घरवालों को परेशान कर देतीं'—जैसे वाक्य आए हैं। किसी क्रिया को ज़ोर देकर कहने के लिए एक से अधिक बार एक ही शब्द का प्रयोग होता है। जैसे वहाँ जा-जाकर थक गया, उन्हें ढूँढ़-ढूँढ़कर देख लिया। इस प्रकार के पाँच वाक्य बनाइए।
3. बोलचाल में प्रयोग होनेवाले शब्द और वाक्यांश 'दादी माँ' कहानी में हैं। इन शब्दों और वाक्यांशों से पता चलता है कि यह कहानी किसी विशेष क्षेत्र से संबंधित है। ऐसे शब्दों और वाक्यांशों में क्षेत्रीय बोलचाल की खूबियाँ होती हैं। उदाहरण के लिए—निकसार, बरह्मा, उरिन, चिउड़ा, छौंका इत्यादि शब्दों को देखा जा सकता है। इन शब्दों का उच्चारण अन्य क्षेत्रीय बोलियों में अलग ढंग से होता है, जैसे—चिउड़ा को चिड़वा, चूड़त्र, पोहा और इसी तरह छौंका को छौंक, तड़का भी कहा जाता है। निकसार, उरिन और बरह्मा शब्द क्रमशः निकास, उऋण और ब्रह्मा शब्द का क्षेत्रीय रूप हैं। इस प्रकार के दस शब्दों को बोलचाल में उपयोग होनेवाली भाषा / बोली से एकत्र कीजिए और कक्षा में लिखकर दिखाइए।

© NCERT not to be republished

Date ______
Page ______

(२०२० - २१)
कक्षा ७
संस्कृत
पाठ १ - वन्दना

निर्देश - पाठ में दिए श्लोक का अर्थ एवं अभ्यास कार्य संस्कृत उत्तर पुस्तिका में लिखो।

श्लोक का अर्थ - पृष्ठ संख्या २ में देखकर लिखें।

अभ्यास कार्य

१. शब्दार्थ -
वाचालम् - बोलने में सक्षम
सर्वेश - सबके स्वामी
वसुन्धरा - धरती
सदा - सदैव / हमेशा
प्रसीद - प्रसन्न होना

श्लोक का अनुवाद → ईश्वर हमारे पिता के समान एवं धरती माता सदृश हैं। हम सभी उन दोनों के पुत्र हैं। हम सब नतमस्तक होकर

Teacher's Sign. ______

Scanned by CamScanner

सदैव उनको नमस्कार करते हैं।

३. रिक्त स्थानों की पूर्ति करो —

(क) वाचालम्
(ख) सर्वेश
(ग) वसुन्धरा
(घ) पुत्राः
(ङ) ज्योति

५. स्वयं करें।

५. संस्कृत में अनुवाद करो —

(क) सः मूकं करोति वाचालं।
(ख) हे सर्वेश! प्रसीदतु।
(ग) परमेशः अस्माकम् पिता अस्ति।
(घ) तौ वयं प्रणामं/नमामः कुर्मः।
(ङ) तमसो मा ज्योतिर्गमय।

इस पाठ का अनुवाद एवं अभ्यास-कार्य की पुनरावृत्ति अवश्य करें।

समाप्त

Teacher's Sign.

Scanned by CamScanner

संस्कृत भारती 3

BHARATI BHAWAN (P & D)

देवकान्त झा गोपबन्धु मिश्र

Scanned with CamScanner

विषय-सूची

1.	वन्दना	1
2.	पुनरावर्तन	4
3.	जयतु भारतम्	7
4.	गृध्रमार्जारकथा	11
5.	महात्मा गान्धी	15
6.	विद्या सर्वस्य भूषणम्	19
7.	वर्षा-ऋतुः	24
8.	जयति एकबुद्धिः	28
9.	समाचारपत्रस्य आत्मकथा	33
10.	दुर्गापूजा	37
11.	सूक्तिषट्कम्	41
12.	परमवीरः चन्द्रशेखरः	45
13.	अपरीक्ष्य न कर्तव्यम्	49
14.	विज्ञानस्य समुत्कर्षः	53
15.	बालकः ध्रुवः	56
16.	दिनेशस्य पत्रम्	61
17.	विद्यायाः बुद्धिरुत्तमा	65
18.	मधुबिन्दवः	70
19.	महादानी कर्णः	73
20.	सुभाषितानि	78
	परिशिष्ट (Appendix)	82

Scanned with CamScanner

1

वन्दना

मूकं करोति वाचालं पङ्गुं लङ्घयते गिरिम्।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्।। 1 ।।

सर्वस्वरूप! सर्वेश! सर्वशक्ति-समन्वित!
सर्वपालक! सर्वज्ञ! प्रसीद परमेश्वर।। 2 ।।

परमेशः पिताऽस्माकं जननी तु वसुन्धरा।
वयं सर्वे तयोः पुत्राः नमामस्तौ नताः सदा।। 3 ।।

असतो मा सद्गमय।
तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्माऽमृतं गमय।। 4 ।।

Scanned with CamScanner

• भावार्थ (Meanings)

1. जिनकी कृपा गूँगे को भी बोलने में सक्षम करती है और लँगड़े को ऊँचा पहाड़ पार करवा देती है, उन परमानन्द परमेश्वर को मैं नमस्कार करता हूँ। अर्थात, परमेश्वर ही सामर्थ्य और शक्ति के दाता हैं। उनकी कृपा से असंभव भी संभव हो जाता है। इसलिए, अपने कल्याण के लिए मैं उन्हें प्रणाम करता हूँ।
2. सब रूपों में बसनेवाले, सबों के प्रभु, सबसे शक्तिमान, सबों का पालन करनेवाले और सबकुछ जाननेवाले हे परमेश्वर! आप (मुझपर) प्रसन्न हों। अर्थात, प्रभु की महिमा अपार है। वे सबकी आत्मा में बसनेवाले, सबों के ईश्वर, सबसे प्रबल, सबों के पालनहार और सबों के मन की बात जाननेवाले हैं। अतएव, उनकी प्रसन्नता कल्याण का आधार है।
3. परमेश्वर हमारे पिता हैं। पुनः धरती हमारी माता है। हम सभी उन दोनों के पुत्र हैं। हमलोग हमेशा उनको झुककर प्रणाम करते हैं। अर्थात, ईश्वर पिता और पृथ्वी माता होने के कारण धरती के सारे लोग हमारे भाई-बन्धु हैं। विश्व के नागरिक के रूप में हम अपने इन माता-पिता के चरणों में अपना शीश झुकाते हैं।
4. (हे भगवन्!) आप मुझे बुराई से अच्छाई की ओर प्रेरित करें। अज्ञान के अन्धकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर प्रेरित करें। मृत्यु से अमरता की ओर प्रेरित करें। अर्थात, भगवान की कृपा से ही हम गलत मार्ग से सही मार्ग की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर तथा जन्म-मृत्यु के बन्धन से छूटकर मुक्ति की ओर जा सकते हैं। उनकी कृपा के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है।

शब्द-संग्रह (Word List)

मूकम् = गूँगे को (a dumb person)
वाचालम् = बोलने में सक्षम (capable of speech)
पङ्गुम् = लँगड़े को (a lame person)
लङ्घयते (लङ्घ्) = पार करा देता है (helps to cross)
गिरिम् = पहाड़ (mountain)
यत्कृपा = जिसकी कृपा (whose grace)
तमहम् (तम् + अहम्) = उसकी मैं (to Him I)
वन्दे (वन्द्) = वन्दना करता हूँ ([I] pray)
परमानन्दमाधवम् (परम + आनन्दमाधवम्) = उत्तम आनन्ददायक ईश्वर की (to God, the giver of bliss)
सर्वस्वरूप = सभी रूपों में विद्यमान (omnipresent)
सर्वेश (सर्व + ईश) = सबके स्वामी (Lord of all)
समन्वित = युक्त (possessed of)
सर्वज्ञ = सबकुछ जाननेवाला (all-knowing)
प्रसीद (प्र-सद्) = प्रसन्न हो (be pleased)
परमेशः (परम + ईशः) = सबसे बड़ा स्वामी (Almighty)
वसुन्धरा = धरती (the earth)
नमामस्तौ (नमामः + तौ) = उन दो को प्रणाम करते हैं ([we] bow to those two)
नताः = झुके हुए (bowed)
सदा = हमेशा (always)
असतो मा (असतः + मा) = बुराई से मुझे (me from evil)

Scanned with CamScanner

सद्गमय (सत् + गमय) = अच्छाई की ओर प्रेरित करो (lead [me] to goodness)

तमसो मा (तमसः + मा) = अंधकार से मुझे (me from darkness)

ज्योतिः = प्रकाश (light)

ज्योतिर्गमय (ज्योतिः + गमय) = प्रकाश की ओर प्रेरित करो (lead [me] to light)

मृत्योर्माऽमृतम् (मृत्योः + मा + अमृतम्) = मुझे मृत्यु से अमरता की ओर (me from mortality to immortality)

अभ्यास

1. **निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखें।** (Write the meanings of the following words.)
   वाचालम्, सर्वेश, वसुन्धरा, सदा, प्रसीद

2. **निम्नलिखित श्लोक का अनुवाद करें।** (Translate the following shloka.)
   परमेशः पिताऽस्माकं जननी तु वसुन्धरा।
   वयं सर्वे तयोः पुत्राः नमामस्तौ नताः सदा।।

3. **पाठानुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।** (Fill in the blanks according to the lesson.)
   (क) मूकं करोति ..... वाचालम् ..... ।
   (ख) सर्वस्वरूप! ..... !
   (ग) जननी तु ..... ।
   (घ) वयं सर्वे तयोः ..... ।
   (ङ) तमसो मा ..... र्गमय।

4. **निम्नलिखित शब्दों से वाक्य गठन करें।** (Make sentences with the following words.)
   मूकम्, सर्वज्ञः, वसुन्धरा, नमामः, सदा

5. **संस्कृत में अनुवाद करें।** (Translate into Sanskrit.)
   (क) वह गूँगे को बोलने में सक्षम बनाता है।
   (He turns a dumb person into a person capable of speech.)
   (ख) हे सबके स्वामी! प्रसन्न हो। (O Lord of all! be pleased.)
   (ग) परमेश्वर हमारे पिता हैं। (The Almighty is our Father.)
   (घ) उन दो को हम प्रणाम करते हैं। (We salute those two.)
   (ङ) मुझे अन्धकार से प्रकाश की ओर प्रेरित करो। (Lead me from darkness to light.)

Scanned with CamScanner

2

पुनरावर्तन

रामः विजयते

रामो राजमणिः सदा विजयते रामं रमेशं भजे
रामेण निहता निशाचरचमू रामाय तस्मै नमः।

रामात् नास्ति परायणं परतरं रामस्य दासोऽस्म्यहं
रामे चित्तलयः सदा भवतु मे हे राम! माम् उद्धर।।

रामः वनम् अगच्छत्। लक्ष्मणः सीता च रामेण सह अगच्छताम्। तत्र ते पर्णकुटीरे अतिष्ठन्। लङ्कायाः नृपः रावणः वनात् सीताम् अहरत्।

रामस्य भक्ताः वानराः समुद्रे सेतुबन्धनं कुर्वन्ति। ततः परं रामः लक्ष्मणेन सह लङ्कां गच्छति। ते वानराः अपि तत्र गच्छन्ति।

रावणेन सह रामस्य युद्धं भविष्यति। युद्धे रावणादयः राक्षसाः मरिष्यन्ति। सीतया लक्ष्मणेन च सह रामः अयोध्याम् आगमिष्यति।

रामः अयोध्यायाः राजा भवतु। रामस्य राज्ये जनाः कदापि दुःखं न अनुभवन्तु। सर्वे जनाः सुखेन तिष्ठन्तु।

शब्द-संग्रह (Word List)

राजमणिः = राजाओं में श्रेष्ठ (jewel of the kings)
विजयते (वि-जि) = विजयी होता है (triumphs)
रमेशम् = विष्णु (Lord Vishnu)
भजे (भज्) = भजन करता हूँ ([I] pray)
निहता (नि-हन्) = मारी गई (killed)
निशाचरचमूः = राक्षसों की सेना (demons' army)
परायणम् (पर + अयनम्) = दूसरा मार्ग (another way)
परतरम् = श्रेष्ठतर (greater)
दासोऽस्म्यहम् (दासः + अस्मि + अहम्) = मैं सेवक हूँ (I am a servant)
चित्तलयः = मन का ध्यान (meditation)
उद्धर (उत्-हर्) = बचाओ (save)
पर्णकुटीरे = पत्तों से बनी कुटिया में (in a hut made of leaves)

Scanned with CamScanner

अतिष्ठन् (स्था) = ठहरे (stayed)
नृपः = राजा (king)
अहरत् (हृ) = अपहरण किया (carried away)
सेतुबन्धनं कुर्वन्ति (कृ) = बाँध का निर्माण करते हैं (construct a bridge)
रावणादयः (रावण + आदयः) = रावण आदि (Ravana, etc.)
मरिष्यन्ति (मृ) = मरेंगे (will die)
आगमिष्यति (आ-गम्) = आएगा (will come)
न अनुभवन्तु (अनु-भू) = अनुभव न करें (let not feel)
सुखेन = सुख से (with happiness)

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दें। (Answer in Sanskrit.)

(क) कः विजयते? रामः विजयते।
(ख) कस्मै नमः?
(ग) अहं कस्य दासः अस्मि?
(घ) कः सीताम् अहरत्?
(ङ) केन सह रामस्य युद्धं भविष्यति?

2. विशेषण एवं विशेष्य को पहचानें। (Identify the adjectives and the nouns.)

	विशेषण	विशेष्य
(क) विशाले देशे	विशाले	देशे
(ख) दुष्टान् असुरान्		
(ग) उत्तमाः सेवकाः		
(घ) शोभां रमणीयाम्		
(ङ) मधुरेषु फलेषु		
(च) जलं शीतलम्		

3. शब्दरूपों के विभक्ति एवं वचन पहचानें।
(Identify the case-ending and number of each word form.)

	विभक्ति	वचन
(क) रामेण	तृतीया	एकवचन
(ख) तस्मै		
(ग) रामस्य		
(घ) वनात्		
(ङ) सीताम्		
(च) राज्ये		

Scanned with CamScanner

4. धातुरूपों के लकार एवं पुरुष पहचानें।
(Identify the 'लकार' and person of each verb.)

	लकार	पुरुष
(क) गच्छति	लट्	प्रथम
(ख) अतिष्ठन्		
(ग) मरिष्यन्ति		
(घ) तिष्ठन्तु		
(ङ) कुर्वन्ति		

5. निम्नलिखित वाक्यों का अनुवाद करें। (Translate the following sentences.)

(क) अहं रामस्य दासः अस्मि।

(ख) ते पर्णकुटीरे अतिष्ठन्।

(ग) युद्धे रावणः मरिष्यति।

(घ) सर्वे जनाः सुखेन तिष्ठन्तु।

6. संस्कृत में अनुवाद करें। (Translate into Sanskrit.)

(क) राम लक्ष्मण के साथ लङ्का गए।
(Rama went to Lanka with Lakshmana.)

(ख) राम को नमस्कार। (Salutations to Rama.)

(ग) हे राम! मुझे बचाओ। (O Rama! save me.)

(घ) हम रामायण पढ़ेंगे। (We shall read the Ramayana.)

(ङ) [तुम] एक अच्छी पुस्तक पढ़ो। ([You] Read a good book.)

(च) रावण लङ्का का राजा था। (Ravana was the king of Lanka.)

(छ) उसने सीता का जंगल से अपहरण किया। (He carried away Sita from the forest.)

Scanned with CamScanner

3

जयतु भारतम्

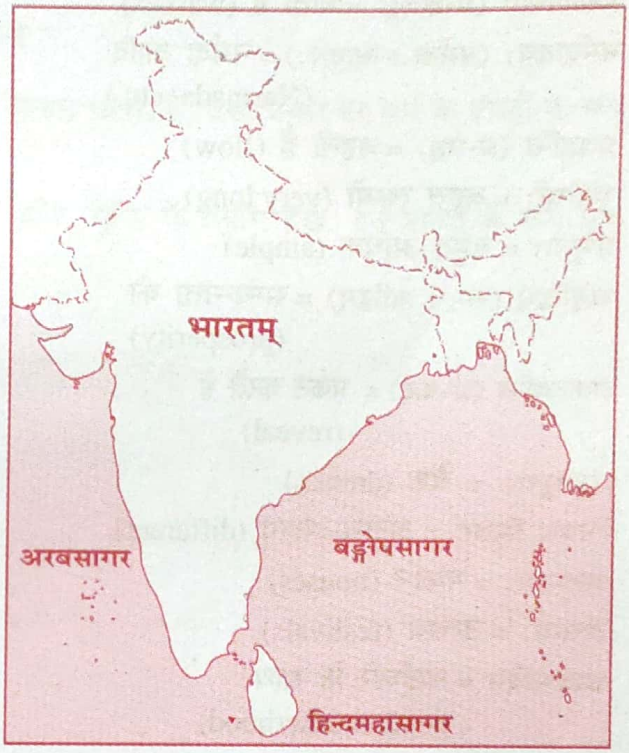

भारतम् अस्माकं देशः अस्ति। अस्य उत्तरदिशायां पर्वतराजः हिमालयः मुकुटमणिः इवास्ति। दक्षिणदिशायां हिन्दमहासागरः भारतस्य चरणौ प्रक्षालयति। पूर्वदिशायां बङ्गोपसागरः पश्चिमदिशायाम् अरबसागरश्च स्तः।

अत्र गङ्गा, यमुना, नर्मदादयः नद्यः प्रवहन्ति। हरितानि कृषिक्षेत्राणि, सुदीर्घाः पर्वतमालाः, विशालानि वनानि प्रभूताः खनिजपदार्थाः चास्य देशस्य समृद्धिं प्रकटयन्ति।

अस्मिन् देशे विविधाः भाषाः सन्ति। जनानां वेशभूषाः अपि भिन्नाः भिन्नाः भवन्ति। तेषां भोजनानि आवासाः उत्सवाः च विविधाः भवन्ति। किन्तु सर्वे एकत्र भ्रातृभावेन तिष्ठन्ति।

भारतं बहुप्राचीनः देशः अस्ति। अत्र हि विश्वप्रसिद्धाः वेदाः, पुराणानि, रामायणम्, महाभारतम्, आयुर्वेदादयः ग्रन्थाः रचिताः आसन्। अस्मिन् देशे वाल्मीकि-कालिदासादयः महाकवयः आसन्। पद्मिनी-लक्ष्मीबाईसमानाः वीराङ्गनाः गान्धी-सुभाषादयः राष्ट्रनायकाः चासन्। आर्यभट्ट-जगदीशचन्द्रबसु-सदृशाः वैज्ञानिकाः, विवेकानन्द-दयानन्दतुल्याः संस्कारकाः अपि अत्रैव अभवन्। इदानीम् अपि भारतीयाः विविधेषु क्षेत्रेषु अग्रेसराः सन्ति। भारते अनेके मुनयः अभवन्। तेषां मुनीनाम् अध्यात्मविद्यायां निविष्टं ज्ञानम् आसीत्।

'सत्यमेव जयते' भारतस्य आदर्शवाक्यम् अस्ति। अस्य राष्ट्रियः ध्वजः 'त्रिरङ्गम्' अस्ति। 'जनगणमन' एतस्य राष्ट्रगानं 'वन्दे मातरम्' राष्ट्रगीतं च अस्ति। भारतस्य राजधानी 'दिल्ली' अस्ति। भारते अनेकतायाम् एकता अस्ति। एतत् भारतवर्षं विश्वे जयतु।

Scanned with CamScanner

शब्द-संग्रह (Word List)

जयतु (जि) = विजयी हो (be victorious)
मुकुटमणिः = मुकुट की मणि (the gem of the crown)
इवास्ति (इव + अस्ति) = जैसा है (is like)
प्रक्षालयति (प्र-क्षाल्) = धोता है (washes)
नर्मदादयः (नर्मदा + आदयः) = नर्मदा आदि (Narmada, etc.)
प्रवहन्ति (प्र-वह्) = बहती हैं (flow)
सुदीर्घाः = बहुत लम्बी (very long)
प्रभूताः = बहुत अधिक (ample)
समृद्धिम् (सम् + ऋद्धिम्) = सम्पन्नता को (prosperity)
प्रकटयन्ति (प्र-कट्) = प्रकट करते हैं (reveal)
वेशभूषाः = वेश (dresses)
भिन्नाः भिन्नाः = अलग-अलग (different)
आवासाः = मकान (houses)
उत्सवाः = उत्सव (festivals)
भ्रातृभावेन = भाईचारे के साथ (with brotherhood)
रचिताः (रच्) = रचे गए (composed)
कालिदासादयः (कालिदास + आदयः) = कालिदास आदि (Kalidasa, etc.)
समानाः/सदृशाः/तुल्याः = जैसे (like)
वीराङ्गनाः (वीर + अङ्गनाः) = वीर नारियाँ (brave women)
राष्ट्रनायकाः = देश के नेता (national leaders)
संस्कारकाः (सम् + कारकाः) = सुधारकगण (reformers)
अत्रैव (अत्र + एव) = यहीं (only here)
अग्रेसराः = अग्रणी (leaders)
अध्यात्मविद्यायाम् = अध्यात्मविद्या में (in spiritual knowledge)
निविष्टम् (नि-विश्) = प्रौढ़, पूर्ण (profound)
सत्यमेव (सत्यम् + एव) = सत्य ही (truth alone)
आदर्शवाक्यम् = आदर्श वाक्य (motto)
अनेकतायाम् = अनेकता में (in diversity)

• पढ़ें और समझें (Read and understand)

◊ सन्धि—दो ध्वनियों के मेल से शब्द में उत्पन्न विकार को सन्धि कहते हैं। यथा—

कालिदास + आदयः = कालिदासादयः

सन्धि के तीन भेद हैं—

(i) स्वर सन्धि, (ii) व्यञ्जन सन्धि और (iii) विसर्ग सन्धि

स्वरों के मेल से होनेवाले ध्वनि-परिवर्तन को 'स्वर सन्धि' कहते हैं। स्वर सन्धि के पाँच भेद होते हैं। उनमें से एक है—'दीर्घ सन्धि'।

दीर्घ सन्धि में समान स्वर मिलकर दीर्घ हो जाते हैं। यथा—

अ/आ + अ/आ = आ

हिम + आलयः = हिमालयः
च + आसन् = चासन्
च + अस्य = चास्य
इव + अस्ति = इवास्ति

Scanned with CamScanner

◊ **शब्द**— शब्दों के अन्त में आनेवाले स्वरों के आधार पर ही शब्दों (पुँलिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग या नपुंसकलिङ्ग) को 'अकारान्त', 'आकारान्त', 'इकारान्त' आदि कहते हैं। यथा—

1. अकारान्त पुँलिङ्ग — देश, महासागर
2. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग — वन, पुष्प
3. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग — नर्मदा, वीराङ्गना
4. इकारान्त पुँलिङ्ग — मणि, कवि, मुनि
5. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग — समृद्धि, शान्ति
6. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग — नदी, राजधानी

जिस प्रकार सभी अकारान्त पुँलिङ्ग शब्दों के रूप एक समान चलते हैं, उसी प्रकार हर वर्ग के शब्दों के रूप आपस में प्रायः समान ही चलते हैं।

पाठ में आपने इकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'कवि', 'मणि' और 'मुनि' के प्रयोग देखे। इन शब्दों के रूप एक समान चलते हैं। (रूप के लिए परिशिष्ट देखें।)

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दें। (Answer in Sanskrit.)

(क) भारतस्य उत्तरदिशायां कः अस्ति? भारतस्य उत्तरदिशायां पर्वतराजः हिमालयः अस्ति।

(ख) अस्माकं देशः कः?

(ग) भारतस्य राजधानी का?

(घ) भारतस्य आदर्शवाक्यं किम्?

2. सन्धि-विच्छेद करें। (Disjoin the sandhis.)

इवास्ति, नर्मदादयः, चासन्, वीराङ्गनाः, चास्य

3. इकारान्त पुँलिङ्ग 'मुनि' शब्द के रूप तृतीया और षष्ठी विभक्तियों में लिखें।
(Decline [write the forms of] the इ-ending masculine word 'मुनि' in the 3rd and 6th case-endings.)

4. पाठानुसार उचित नामों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें।
(Fill in the blanks with suitable names according to the lesson.)

(क) भारतस्य द्वौ राष्ट्रनायकौ ....गान्धी..... .....सुभाषः.....

(ख) भारतस्य द्वौ ग्रन्थौ ....

(ग) भारतस्य द्वे वीराङ्गने ....

(घ) भारतस्य द्वौ संस्कारकौ ....

Scanned with CamScanner

(ङ) भारतस्य आदर्शवाक्यम् .....

(च) भारतस्य राष्ट्रगीतम् .....

5. निम्नलिखित शब्दरूपों के लिङ्ग, विभक्ति एवं वचन पहचानें।
(Identify the gender, case-ending and number of each of the following word forms.)

	लिङ्ग	विभक्ति	वचन
(क) मणिः	पुँलिङ्ग	प्रथमा	एकवचन
(ख) पूर्वदिशायाम्	.....	.....	.....
(ग) महाकवयः	.....	.....	.....
(घ) देशे	.....	.....	.....
(ङ) क्षेत्रेषु	.....	.....	.....
(च) मुनीनाम्	.....	.....	.....

6. निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखें। (Write the meanings of the following words.)
सुदीर्घाः, पर्वतराजः, संस्कारकाः, कवीनाम्, प्रक्षालयति

7. संस्कृत में अनुवाद करें। (Translate into Sanskrit.)

(क) भारत हमारा देश है। (India is our country.)

(ख) कालिदास एक महान कवि थे। (Kalidasa was a great poet.)

(ग) भारत की राजधानी दिल्ली है। (Delhi is the capital of India.)

(घ) भारत की दक्षिण दिशा में हिन्दमहासागर है। (The Indian Ocean is to the south of India.)

(ङ) यहाँ गङ्गा नदी बहती है। (The river Ganges flows here.)

(च) भारतीय विभिन्न क्षेत्रों में अग्रणी हैं। (Indians are leaders in various fields.)

Scanned with CamScanner

4

गृध्रमार्जारकथा

एकस्मिन् पर्वते एकः विशालः शाल्मलीवृक्षः आसीत्। तत्र जरद्गवो नाम वृद्धः गृध्रः वसति स्म। अन्ये खगाः तस्मै जरद्गवाय स्वाहारात् किञ्चित् किञ्चित् यच्छन्ति स्म। सोऽपि खगशिशूनां रक्षणं करोति स्म।

एकदा दीर्घकर्णो नाम एकः मार्जारः खगशिशून् खादितुं तत्रागतवान्। तं दृष्ट्वा शिशवः भयेन कोलाहलं कृतवन्तः। तत् श्रुत्वा जरद्गवः मार्जारं पृष्टवान्— "कः त्वम्? अत्र कथम् आगतवान्?" सोऽवदत्— "अहं मार्जारः।"

गृध्रोऽवदत्— "मार्जाराः मांसप्रियाः भवन्ति। अत्र पक्षिशावकाः निवसन्ति। अतः दूरं गच्छ, अन्यथा त्वां मारयिष्यामि।"

मार्जारोऽवदत्— "अहं गङ्गायां नित्यं स्नात्वा अहिंसाव्रतम् आचरामि। भवान् अतीव धर्मपरायणः इति जानामि। अतोऽत्र धर्मवार्तां श्रोतुम् आगतवान् अस्मि। अस्ति मम विचारः—अहिंसा परमो धर्मः।"

गृध्रस्य मनसि विश्वासः जातः। ततः सः मार्जारः प्रतिदिनं खगशिशून् कोटरं नीत्वा खादति स्म। क्रमशः शिशूनाम् अभावेन चिन्तिताः खगाः इतस्ततः अन्वेषणं कृतवन्तः। ते वृक्षकोटरे अस्थीनि दृष्टवन्तः। ते चिन्तितवन्तः यत् जरद्गवः एव शिशून् खादितवान्। अतः मिलित्वा ते तं जरद्गवं हतवन्तः। अत एव कथ्यते—

अज्ञातकुलशीलस्य वासो देयो न कस्यचित्।

Scanned with CamScanner

शब्द-संग्रह (Word List)

गृध्रमार्जारकथा = गीध और बिलाव की कथा (the story of a vulture and a male cat)
शाल्मली वृक्षः = सेमल का पेड़ (silk-cotton tree)
स्वाहारात् (स्व + आहारात्) = अपने भोजन से (from their own food)
यच्छन्ति स्म (दाण्/यच्छ्) = देते थे (used to give)
सोऽपि (सः + अपि) = वह भी (he also)
खगशिशूनाम् = पक्षियों के बच्चों की (of the young of birds)
रक्षणम् = बचाव (protection)
मार्जारः = बिलाव (male cat)
खादितुम् = खाने के लिए (to eat)
तत्रागतवान् (तत्र + आगतवान् [आ-गम्]) = वहाँ आया (came there)
कोलाहलम् = शोरगुल (commotion)
कृतवन्तः (कृ) = किया (did)
पृष्टवान् (प्रच्छ्) = पूछा (asked)
मांसप्रियाः = मांसप्रेमी (fond of meat)
मारयिष्यामि (मार्) = मारूँगा ([I] shall kill)
स्नात्वा = नहाकर (having taken a bath)
अहिंसाव्रतम् = अहिंसा का संकल्प (pledge of nonviolence)
अतीव (अति + इव) = बहुत अधिक (extremely)
धर्मपरायणः = धार्मिक (religious)
श्रोतुम् = सुनने के लिए (to listen)
विचारः = विचार (opinion)
मनसि = मन में (in [his] mind)
जातः (जन्) = जागा, जन्मा (arose, was born)
कोटरम् = खोह (hollow)
नीत्वा = ले जाकर (having brought)
अभावेन = अभाव के कारण (owing to the absence)
चिन्तिताः = परेशान (worried)
इतस्ततः (इतः + ततः) = इधर-उधर (here and there)
अन्वेषणम् (अनु + एषणम्) = खोज (search)
अस्थीनि = हड्डियाँ (bones)
दृष्टवन्तः (दृश्) = देखा (saw)
खादितवान् = खाया (ate)
हतवन्तः (हन्) = मारा (killed)
अज्ञातकुलशीलस्य = अनजान वंश और स्वभाव वाला (one whose family and behaviour are not known)
वासो देयो न (वासः + देयः + न) = आश्रय नहीं दिया जाना चाहिए (shelter should not be given)
कस्यचित् = किसी (anyone)

• पढ़ें और समझें (Read and understand)

◊ **विसर्ग सन्धि**—स्वर या व्यञ्जन वर्णों के संयोग से विसर्ग में जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। यथा—

सः + अवदत् = सोऽवदत्
मार्जारः + च = मार्जारश्च
वासः + देयः + न = वासो देयो न
अतः + अत्र = अतोऽत्र

Scanned with CamScanner

◊ 'क्तवतु' प्रत्यय— भूतकाल (past tense) की क्रियाएँ धातु में 'क्तवतु' प्रत्यय जोड़कर भी बनाई जाती हैं। इनका प्रयोग लङ् लकार के रूपों की अपेक्षा सरल है। पुरुष-भेद से इनमें भिन्नता नहीं आती है। यथा—अहं गतवान् (उत्तम पुरुष), त्वम् गतवान् (मध्यम पुरुष) और बालकः गतवान् (प्रथम पुरुष)। किन्तु लिङ्ग और वचन के भेद से इनके रूप बदल जाते हैं। 'क्तवतु' प्रत्यय वाले शब्दों के अंत में पुँलिङ्ग में तवान्, तवन्तौ, तवन्तः और स्त्रीलिङ्ग में तवती, तवत्यौ, तवत्यः जुड़ते हैं।

भूतकाल (Past Tense)

लिङ्ग	वचन	लङ् लकार का प्रयोग	'क्तवतु' प्रत्यय का प्रयोग
पुँ॰	एक॰	रामः अगच्छत्।	रामः गतवान्।
स्त्री॰	एक॰	सीता अगच्छत्।	सीता गतवती।
पुँ॰	एक॰	त्वम् अलिखः।	त्वं लिखितवान्।
स्त्री॰	एक॰	त्वम् अपश्यः।	त्वं दृष्टवती।
पुँ॰	बहु॰	वयम् अपठाम।	वयं पठितवन्तः।
स्त्री॰	बहु॰	वयम् अखादाम।	वयं खादितवत्यः।

◊ पाठ में आपने उकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'शिशु' का प्रयोग देखा। 'शिशु' जैसे सभी उकारान्त पुँलिङ्ग शब्दों के रूप 'साधु' के समान चलते हैं। (रूप के लिए परिशिष्ट देखें।)

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दें। (Answer in Sanskrit.)

(क) गृध्रस्य किं नाम आसीत्?

(ख) मार्जारं दृष्ट्वा शिशवः किं कृतवन्तः?

(ग) मार्जारः प्रतिदिनं किं करोति स्म?

(घ) खगाः कं हतवन्तः?

2. सन्धि-विच्छेद करें। (Disjoin the sandhis.)

स्वाहारात्, तत्रागतवान्, गृध्रोऽवदत्, अतीव, अतोऽत्र, सोऽवदत्।

3. निम्नलिखित वाक्यों को बहुवचन में बदलें।
(Change the following sentences into the plural form.)

(क) किञ्चित् यच्छति स्म। किञ्चित् यच्छन्ति स्म।

(ख) खगशिशुः कोलाहलं कृतवान्।

(ग) त्वं दूरं गच्छ।

(घ) सः अवदत्— 'अहं मार्जारः'।

(ङ) अहं चन्द्रं दृष्टवान्।

Scanned with CamScanner

4. निर्देशानुसार शब्दरूप लिखें। (Decline the words according to the instructions.)

(क) खग	पञ्चमी विभक्ति
(ख) शिशु	द्वितीया विभक्ति
(ग) भय	तृतीया विभक्ति
(घ) गुरु	चतुर्थी विभक्ति

5. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। तत्पश्चात वाक्यों का अनुवाद करें।
(Fill in the blanks with suitable words. Then translate the sentences.)

(क) अहं तत् पुस्तकं ....पठितवान्.... । (पठीतवान्, पठितवान्, पठितवान)

(ख) बालिका विद्यालयं ..... । (गतवान्, गतवति, गतवती)

(ग) त्वम् एकं सुन्दरं चित्रम् ..... । (अपश्यः, अपश्यत्, अपश्यम्)

(घ) ते इतिहासं न ..... । (लिखितवान्, लिखितवत्यः, लिखितवन्तः)

(ङ) मार्जारः प्रतिदिनं पक्षिशावकान् ..... स्म। (खादती, खादति, खादन्ति)

6. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य गठन करें। (Make sentences with the following words.)

आगतवान्, खगशिशुः, अवदत्, प्रतिदिनं, खादितवान्

7. संस्कृत में अनुवाद करें। (Translate into Sanskrit.)

(क) पहाड़ पर एक सेमल का पेड़ था। (There was a silk-cotton tree on the mountain.)

(ख) वहाँ एक गीध रहता था। (A vulture lived there.)

(ग) गीध का नाम जरद्गव था। (The name of the vulture was Jaradgava.)

(घ) कुत्ते मांस के प्रेमी होते हैं। (Dogs are fond of meat.)

(ङ) अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। (Non-violence is the greatest religion.)

(च) दीर्घकर्ण एक बिलाव था। (Dirghakarna was a male cat.)

(छ) अनजान को आश्रय नहीं देना चाहिए। (A stranger should not be given shelter.)

Scanned with CamScanner

5

महात्मा गान्धी

महात्मा गान्धी अस्माकं राष्ट्रपिता अस्ति। एतस्य महापुरुषस्य जन्म गुर्जरराज्यस्य पोरबन्दरनामके नगरे 1869 ईसवीये अक्तूबरमासस्य 2 दिनाङ्के अभवत्। अस्य पिता 'करमचन्द गान्धी' आसीत् माता 'पुतलीबाई' च। एतस्य पूर्णं नाम 'मोहनदास करमचन्द गान्धी' आसीत्।

गान्धिमहोदयस्य प्रारम्भिकी शिक्षा गुर्जरराज्ये एवाभवत्। तदनन्तरं स विधिशास्त्रं पठितुम् आङ्ग्लदेशं गतवान्। शिक्षां समाप्य स स्वदेशमागतवान्। ततः अफ्रिकादेशं गत्वा तत्र रङ्गभेदनीतेः विरोधं कृत्वा सफलतां प्राप्तवान्।

स्वदेशम् आगत्य महात्मा गान्धी आङ्ग्लशासनं विरुध्य आन्दोलनस्य नेतृत्वं कृतवान्। देशस्य कोटिशः जनाः तम् अनुसृतवन्तः। आङ्ग्लशासकाः तं बहुवारं कारागारं प्रेषितवन्तः। तथापि देशस्य स्वतन्त्रतायाः कृते सर्वैः सह मिलित्वा सः अहिंसकम् आन्दोलनं चालितवान्। तस्य नेतृत्वेन अस्माकं देशः 1947 ईसवीये अगस्तमासस्य 15 दिनाङ्के स्वतन्त्रोऽभवत्।

गान्धिमहोदयस्य समाजसेवा मानवसेवा चानुपमा आसीत्। स्वतन्त्रतासङ्ग्रामे सत्यम् अहिंसा चेति अस्य द्वे अस्त्रे आस्ताम्। एषः महात्मा न केवलम् अस्माकं कृते अपितु सम्पूर्णस्य विश्वस्य कृते अनुकरणीयः वन्दनीयः चास्ति।

शब्द-संग्रह (Word List)

महात्मा (महा + आत्मा) = महान आत्मा (great soul)
गुर्जरराज्यस्य = गुजरात राज्य का (of the state of Gujarat)
ईसवीये = ईस्वी में (in AD)
प्रारम्भिकी (प्र + आरम्भिकी) = आरम्भ की (early)
विधिशास्त्रम् = कानून (law)
पठितुम् = पढ़ने के लिए (to study)
आङ्ग्लदेशम् = इंगलैण्ड (England)
समाप्य (सम् + आप्य) = समाप्त कर (after completing)
रङ्गभेदनीतेः = रंग के आधार पर भेद करने की नीति का (of the policy of apartheid)

Scanned with CamScanner

आगत्य = आकर (having come)
विरुध्य = विरोध कर (protesting against)
कोटिशः = करोड़ों (crores)
अनुसृतवन्तः (अनु-सृ) = अनुसरण किया (followed)
आङ्ग्लशासकाः = अँग्रेज शासक (British rulers)
कारागारम् (कारा + आगारम्) = जेल (jail)
प्रेषितवन्तः (प्रेष्) = भेजा (sent)
तथापि (तथा + अपि) = फिर भी (still)
स्वतन्त्रतायाः कृते = स्वतन्त्रता के लिए (for the independence)
मिलित्वा = मिलकर (joining with)
अहिंसकम् = अहिंसक (non-violent)
चालितवान् (चाल्) = चलाया (led)
चानुपमा (च + अनुपमा) = और अतुलनीय (and incomparable)
अस्त्रे = दो अस्त्र (two weapons)
कृते = [के] लिए (for)
अनुकरणीयः = अनुकरण करने योग्य (worthy of emulation)

• पढ़ें और समझें (Read and understand)

◊ **सन्धि-विच्छेद**

स विधिशास्त्रं = सः + विधिशास्त्रं
एवाभवत् = एव + अभवत्
स्वदेशमागतवान् = स्वदेशम् + आगतवान्
स्वतन्त्रोऽभवत् = स्वतन्त्रः + अभवत्
चेति = च + इति
चास्ति = च + अस्ति

◊ **उपसर्ग एवं धातु** (Prefixes and roots)—धातु (root) से पूर्व आकर जो शब्दांश धातु के अर्थ को बदलने की क्षमता रखते हैं, उन्हें 'उपसर्ग' (prefix) कहते हैं। ये बाईस हैं। यथा—प्र, परा, वि, उप, आ आदि। इनके प्रयोग समझें—

गम् (जाना/to go)	गतवान् = गया/went	आगतवान् (आ-गम्) = आया/came
हृ (ले जाना/to carry)	हृतवान् = ले गया/carried	अपहृतवान् (अप-हृ) = अपहरण किया/carried away by force
जि (जीतना/to win)	जितवान् = जीता/won	विजितवान् (वि-जि) = हरा दिया/defeated
कृ (करना/to do)	कृतवान् = किया/did	अपकृतवान् (अप-कृ) = बुराई की/harmed

◊ पाठ में आपने ऋकारान्त पुँलिङ्ग शब्द 'नेतृ', 'पितृ' एवं ऋकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'मातृ' के प्रयोग देखे। 'नेतृ' जैसे सभी ऋकारान्त पुँलिङ्ग शब्दों के रूप 'दातृ' के समान चलते हैं। ('दातृ', 'पितृ' एवं 'मातृ' के रूप के लिए परिशिष्ट देखें।)

Scanned with CamScanner

अभ्यास

1. संस्कृत में उत्तर दें। (Answer in Sanskrit.)

(क) अस्माकं राष्ट्रपिता कः अस्ति?

(ख) गान्धिमहोदयस्य प्रारम्भिकी शिक्षा कुत्र अभवत्?

(ग) गान्धी अफ्रिकादेशे कस्य विरोधं कृतवान्?

(घ) स्वदेशे गान्धी किं विरुध्य आन्दोलनं कृतवान्?

(ङ) गान्धिमहोदयस्य द्वे अस्त्रे के स्तः?

2. सन्धि करें। (Join the sandhis.)

च + इति, च + अस्ति, स्वतन्त्रः + अभवत्, महा + आत्मा, स्वदेशम् + आगतवान्

3. निम्नलिखित पदों में उपसर्गों को पहचानें।
(Identify the prefixes in the following words.)

	पद	उपसर्ग	शेष पद
(क)	अनुभवामि	अनु	भवामि
(ख)	आगतः	.....	.....
(ग)	पराजितः	.....	.....
(घ)	उपदेशः	.....	.....
(ङ)	आगच्छति	.....	.....
(च)	विज्ञानम्	.....	.....

4. निर्देशानुसार शब्दरूप लिखें। (Decline the words according to the instructions.)

(क)	पितृ	द्वितीया विभक्ति
(ख)	शिक्षा	षष्ठी विभक्ति
(ग)	मातृ	सप्तमी विभक्ति
(घ)	दातृ	चतुर्थी विभक्ति

5. निर्देशानुसार धातुरूप लिखें।
(Conjugate [write the forms of] the roots according to the instructions.)

(क)	भू	लङ् लकार, प्रथम पुरुष
(ख)	नम्	लोट् लकार, मध्यम पुरुष

Scanned with CamScanner

(ग) पठ् लृट् लकार, उत्तम पुरुष

(घ) आ-गम् लट् लकार, मध्यम पुरुष

6. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाओं को शुद्ध करें।
(Correct the verbs in the following sentences.)

(क) अहं सुखं न अनुभवति।

(ख) अहिंसा गान्धिमहोदयस्य अस्त्रम् आसम्।

(ग) भारतीया: गान्धिमहोदयं नमतु।

(घ) ग्रीष्मकाले वयं गुर्जरराज्यं गमिष्यन्ति।

7. संस्कृत में अनुवाद करें। (Translate into Sanskrit.)

(क) गाँधी विधिशास्त्र पढ़ने विदेश गए।
(Gandhi went abroad to study law.)

(ख) हम गाँधीजी की आत्मकथा पढ़ें।
(Let us read the autobiography of Gandhiji.)

(ग) सत्य और अहिंसा गाँधीजी के दो अस्त्र थे।
(Truth and non-violence were the two weapons of Gandhiji.)

(घ) हमारा देश अब स्वतंत्र है।
(Our nation is independent now.)

(ङ) महात्मा गाँधी हमारे राष्ट्रपिता हैं।
(Mahatma Gandhi is the father of our nation.)

(च) गाँधीजी का जन्म गुजरात राज्य में हुआ।
(Gandhiji's birth took place in Gujarat.)

(छ) वे सारे संसार के लिए वन्दनीय हैं।
(He is adorable for the whole world.)

Scanned with CamScanner

See Class 7 Science on DIKSHA at
https://diksha.gov.in/play/content/do_3129911224626790401190?referrer=utm_source%3Ddiksha_mobile%26utm_content%3Ddo_3127964552630435841170 78%26utm_campaign%3Dshare_content
Get DIKSHA app from:
https://play.google.com/store/apps/details?id=in.gov.diksha.app&referrer=utm_source%3D7139114c12c8b2003b1735f6bbbf9571941ffc1a%26utm_campaign%3Dshare_app
👆link for the tutorial of class 7 science.
Instructions for the students:
1. Download the diksha app from the play store.
2. Open the app and login as student.
3. Select the medium in which u want to study.
4. Now select the class 7
5. Select the science subject.
6. Open the 2 chapter (Nutrition in animals)
7. Go through the explanation content in the video.

See Class 7 Science on DIKSHA at
https://diksha.gov.in/play/content/do_3127985849589760001730 5?referrer=utm_source%3Ddiksha_mobile%26utm_content%3Ddo_3127964552630435841170 78%26utm_campaign%3Dshare_content
Get DIKSHA app from:
https://play.google.com/store/apps/details?id=in.gov.diksha.app&referrer=utm_source%3D7139114c12c8b2003b1735f6bbbf9571941ffc1a%26utm_campaign%3Dshare_app
👆link for the assignments of class 7 science.
Class 7 science

Instructions for the students.
1. Try to understand and learn the need of nutrition in organism.
2.Practice the diagram of human digestive system.
3. Learn and Write the functions of different types of teeth present in human being.
4.Try to do the exercises of chapter in your note book.

Scanned by CamScanner

Session 2020-21

Class- VII

Subject: Social Science

Study Material

Follow the Instructions given below:-

Here's the link to the file:

Visit link: https://s.docworkspace.com/d/AANa1yb62shDwcb9l8OdFA

Shared from WPS Office:

Visit link: https://activity.wps.com/wpsoffice2020?utm_source=wa

9:30

Mathematics class7

Chapter 2

Instructions for students:

1. Go through the chapter.

2.Do the exercises given in the chapter in your copies.

https://diksha.gov.in/cbse/play/collection/do_31279645525914419212044 3?contentType=TextBook&contentId=do_31299112267045888119 4

3. Below class 7 Mathematics Select the option Fraction and Decimals , from the Question bank do long answer, short answer and very short answer in your Maths copy.

Session 2020-21

Class- VII

Subject: Social Science

Study Material

Follow the Instructions given below:-

Here's the link to the file:

Visit link: https://s.docworkspace.com/d/AANa1yb62shDwcb9l8OdFA

Shared from WPS Office:

Visit link: https://activity.wps.com/wpsoffice2020?utm_source=wa

Session 2020-21

Class- VII

Subject: Computer Science

Study Material

Computer Science

Subject- Computer
Class 7th standard
Lesson 2 charts in Excel 2010
Do the following questions in your copy.
1. What is a chart?
2. What are spark lines?
3. Name any five components of a chart.